बड़ी तादाद में बेच रही है क्योंकि उन के पास फाडर की कमी है इस लिये वहां कैटिल कैंप महाराष्ट्र के अन्य जिलों में खोले जायें और केन्द्रीय सरकार की जो टीम जाने वाली है उस में किसी प्रकार का विलम्ब न किया जाय और उसको सर्वेक्षण के लिये जल्दी से जल्दी भेजा जाय और राज्य सरकार की जो 450 करोड़ की मांग है उस को केन्द्रीय सरकार पूरा करे। धन्यवाद।

**REFERENCE TO THE. RISE IN PRICES OF VANASPATI AND EDIBLE OILS**

SHRI JAGESH DESAI (Maharashtra): Mr. Chairman. Sir, I am very much thankful to you for allowing me to mention a situation of rising prices in vanaspati and groundunt oil. Sir, during the . last year, in the month of May also, through a similar special mention, I had cautioned the Government that if proper action is not taken, the prices will rise to such an extent that the Government will not be able to make oil available for the use of common man at a very reasonable price. Sir, what has happened? This is the period when arrivals of groundunt seeds in the market is maximum. In spite of that, the prices are going up everyday. Sir, the prices have gone up by 22 per cent from Ist December, 1985 to Ist December, 1986. Similarly, in the case of vanaspati, the prices have gone up by 33 per cent in one year. The vanaspati price have gone up by Rs. 2 per k.g. only in one day. Sir, this a situation. We want to give remunerative prices to the farmers. The Government policy is to import as less edible oils as possible. We agree with that. But I fear that the businessmen and other people will hoard the stock and they will bring it in the market, in the month of June when there will be acute shortages and as such, I request the Government that through the Marketing Federation and through the F.C.I, groundnut seeds and other seeds must be purchased from the farmers at very reasonable prices and they should stock it. Those groundnut and other oil seeds should be brought in the market in tha month of June, for extracting oil from these oil seeds. Sir, in the month of September, 1986, the vanaspati oil was sold at Rs. 27. per kg, and if this time, proper remedial steps are not taken, it will go beyond Rs. 35. per kg. and as such, Government must plan its import policy in respect of edible oils right from now and purchase from the farmers oil seeds at a very good prices and stock it. Thank you.

REFERENCE TO THE NEED TO ESTABLISH PARITY OF ASSISTANCE BETWEEN DISPLACED SETTLERS AND TRIBAL FAMILIES IN DANDAKARANYA PROJECT

SHRI BASUDEV MOHAPATRA (Orissa): Mr. Chairman, Sir, I would like to draw the attention of the Government through you to a small problem of the State of Orissa. In the Dandakaranya Project Area, displaced persons as wellas landless tribal families were settled down in consultation with the State Government. But Dandakaranya Authority could not agree to render financial assistance to the tribal families. As such, a Committee was appointed by the Dandakaranya Authority to finalise the matter. After much discussion with the concerned State Governments, the committee recommended for parity of assistance between D.P. settlers taken by the D.D.A, and Tribal settlers taken by the State Government. The parity of assistance would be for D.P. family Rs. 10,000 and for Tribal family Rs. 7,000 per annum.

The State Government from time to time has been requesting the Government of India for 'approval of the pattern of family assistance, for the Tribal families.

But the Government of India has not accorded any approval of the said proposal. As a result, the Tribal families settled in the area do not get any financial assistance.

Therefore, Sir, I would request the hon. Minister for Home to expedite the approv- in the matter so that poor Tribal families would be benefited by getting their fin&nci'al assistance. Thank you.

**REFERENCE TO THE NEED TO IMPLEMENT "YOUTH PARLIAMENT" PROGRAMME THROUGHOUT INDIA**

**श्री राम चन्द्र विकल** (उत्तर प्रदेश) : सभापति महोदय में आपका हृदय से आभारी हूं कि आपने मुझे "युवा संसद" के द्वारा देश में डेमोक्रेसी को सफल बनाने के लिये यह विशेष-महत्व का प्रश्न उठाने का अवसर दिया है। सभापति महोदय डेमोक्रेसी ही नहीं बल्कि देश के लिये कोई भी संस्कार अगर बच्चों में पैदा किये जाते हैं तो वह अमिट अमर होते हैं और मजबूत होते हैं। हमारे देश में डेमोक्रेसी और देशों के मुकाबले में सफल है। फिर भी भावी-पीढ़ी में डेमोक्रेसी की ट्रेनिंग दी जाये यह बहुत अत्यावश्यक है।

सभापति महोदय पहले यह दिल्ली राज्य में ही चालू था जब 1971 में मैं यहां लोकसभा का सदस्य होकर आया था मैंने जब यहां के स्कूल के बच्चों में जाकर देखा। सौभाग्य से इन्दिरा गांधी जी ने इसमें बहुत मदद की और आज यह नागालैंड में तमिलनाडू में अरुणाचल में हरियाणा में राजस्थान में उत्तर-प्रदेश में और मध्यप्रदेश में भी चालू है। लेकिन बाकी जो और राज्य हैं उनमें चालू नहीं है। मैं आपके माध्यम से सरकार का संसदीय कार्यमंत्री जी का ध्यान इस तरफ दिलाना चाहूंगा कि जो और राज्य हैं जहां यूथ पार्लियामेंट का कार्यसंचालन नहीं है उन राज्यों में मिलकर वहां भी चलाएं। अभी तक यह केन्द्रीय सरकार के तहत काम चलाया जा रहा है। मेरा ऐसा अनुभव हुआ है कि राज्य सरकारें अगर इसमें दिलचस्पी लें तो इसे और गति से बढ़ा सकते हैं।

सभापति महोदय मैं अनुभव के तौर पर यह कह सकता हूं कि युवा पीढ़ी में जो हमारे स्कूलों में लीडर आफ आपोजीशन बनते हैं विभिन्न पार्टियों के लीडर बनते हैं स्पीकर बनते हैं प्राइम-मिनिस्टर बनते हैं विभिन्न विभागों के मंत्री बनते हैं उनका जो ज्ञान है राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय जगत का वह मैं अपने से ज्यादा कहने को तैयार हूं और किसी माननीय-सदस्य या मंत्री से कहने को तैयार नहीं हूं। आज हमारी युवा-पीढ़ी में इससे हमारी राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं का ज्ञान आया है चाहे हमारी सुरक्षा पट्टी का सवाल हो, चाहे ला एण्ड आर्डर का सवाल हो, चाहे पंजाब समस्या हो, चाहे असम समस्या हो, चाहे खाद्य समस्या हो, जो भी समस्याएं आज हमारे देश के सामने हैं, वे युवा पीढ़ी में इस रूप में आयी हुई हैं कि उनको उसका बड़ा भारी ज्ञान हो जाता है इसके सहारे से। दूसरा ज्ञान हो नहीं काफी नहीं है डेमोक्रेसी में यह भी जरूरी है कि हम अपने विचारों को प्रभावी ढंग से दूसरों से कह सकें और यह बात मैं देख रहा हूं युवा-पीढ़ी में यूथ-पार्लियामेंट के द्वारा प्रभावी ढंग से अपने विचार को दूसरों के सामने कहने की भावना पैदा हो जाती है। तीसरा जो गुण पैदा होता है वह सहनशक्ति का होता है। मुझे यह निस्संकोच कहने में कोई डर नहीं है कि हमारी असेम्बलियों में और दूसरी जगहों में भी जहां तक हम* एक माननीय सदस्य* को देखा करते थे कि स्पीकर को धकेल कर बैठ जाया करते थे सारे देखते थे। आज की युवा पीढ़ी में इस तरह की कोई बात नहीं है कि ऐसी भावना को पैदा करें... (व्यवधान)...

MR. CHAIRMAN; Don't record the name. Please say "some Members."

**श्री राम चन्द्र विकल** : सहनशक्ति का मैं कह रहा था। पक्ष और विपक्ष में

Substituted as ordered by the Chai.